# हे गोविन्द, हे गोपाल

हे गोविन्द, हे गोपाल, हे गोविन्द राखो शरण।
अब तो जीवन हारे॥ धृ॥

हे गोविन्द! हे गोपाल! हे मेरे परम प्रिय भगवान श्रीकृष्ण,
मेरी रक्षा करो, मुझे शरण दो।
मैं हताश हो गया हूँ; ऐसा लगता है कि मेरा जीवन निकलता जा रहा है।

नीर पीवन हेतु गयो, सिन्धु के किनारे।
सिन्धु बीच बसत ग्राह चरण धरि पछारे॥ १॥

गजेन्द्र पानी पीने के लिए एक सरोवर पर गया था।
उस सरोवर में एक मगरमच्छ रहता था
जिसने गजराज पर आक्रमण कर उसके पैर को अपने मुँह में जकड़ लिया।

चार प्रहर युद्ध भयो लै गयो मँझधारे।
नाक-कान डुबन लागे कृष्ण को पुकारे॥ २॥

स्वयं को बचाने के लिए गजराज चारों प्रहर तक संघर्ष करता रहा,
पर मगरमच्छ तो उसे मझधार में, अत्यन्त गहरे पानी में घसीटता ही जा रहा था।
जैसे ही गजेन्द्र के नाक-कान पानी में डूबने लगे
और वह खुद भी बस डूबने ही वाला था,
उसने भगवान श्रीकृष्ण को पुकारा।

द्वारका में शब्द गयो, शोर भयो भारे।
शंख-चक्र-गदा-पद्म, गरुड़ लै सिधारे॥ ३॥

उसकी यह व्यथाभरी पुकार भगवान श्रीकृष्ण की द्वारकानगरी तक पहुँची
और वहाँ शोर होने लगा।
अपने हाथों में शंख, चक्र, गदा व कमलपुष्प धारण किए,
व गरुड पर सवार होकर भगवान तत्काल अपने भक्त को बचाने के लिए निकल पड़े।

सूर कहे श्याम सुनो, शरण है तिहारे।
अबकी बार पार करो, नन्द के दुलारे॥ ४॥

सूरदास जी कहते हैं : हे श्याम, हे नन्द के दुलारे, सुनो
मैं तुम्हारी शरण में आया हूँ!
मुझे उबार लो और सुरक्षित रूप से इस भवसागर से पार करो।

डिज़ाइन व अंग्रेज़ी भाषान्तर © एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।